भाकृअनुप-राष्ट्रीय मात्स्यिकी आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो द्वारा 'मत्स्य संरक्षण विज्ञान में नई दिशाएँ' विषय पर राष्ट्रीय वैज्ञानिक हिंदी संगोष्ठी-सह-कार्यशाला का आयोजन

लखनऊ, 25.09.2024

भाकृअनुप-राष्ट्रीय मात्स्यिकी आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो, लखनऊ द्वारा 'मत्स्य संरक्षण विज्ञान में नई दिशाएँ' विषय पर राष्ट्रीय वैज्ञानिक हिंदी संगोष्ठी-सह-कार्यशाला का आयोजन किया गया। संगोष्ठी-सह-कार्यशाला का उद्घाटन चन्द्र शेखर आज़ाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कानपुर के कुलपति डॉ. आनंद कुमार सिंह ने किया। इस अवसर पर उपस्थित सम्मानित अतिथियों में डॉ. सुधीर रायजादा, पूर्व एडीजी, आईसीएआर, नई दिल्ली, डॉ. अतुल कुमार सिंह, पूर्व निदेशक, आईएसीआर-डीसीएफआर, भीमताल, डॉ. आई.जे. सिंह पूर्व डीन मत्स्य विज्ञान संकाय, जीबी पंत कृषि और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, पंतनगर, डॉ. एम सिराजुद्दीन, प्रोफेसर और प्रमुख, प्राणिशास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय थे। आईसीएआर-एनबीएफजीआर के निदेशक डॉ. उत्तम कुमार सरकार ने अतिथियों और प्रतिभागियों का स्वागत किया और हितधारकों तक प्रौद्योगिकियों के प्रभावी प्रसार के लिए राजभाषा हिंदी में ऐसी कार्यशाला आयोजित करने की आवश्यकता पर जोर दिया। कार्यशाला के समन्वयक एवं विभागाध्यक्ष डॉ. राजीव कुमार सिंह ने कार्यशाला के बारे में विस्तृत जानकारी दी। अपने संबोधन में, मुख्य अतिथि, डॉ. आनंद कुमार सिंह ने कहा कि देश के मत्स्य संसाधन समाज में व्याप्त कुपोषण की समस्या को दूर करने, रोजगार के अवसर पैदा करने और स्थानीय समुदायों के लिए आजीविका के विकल्पों को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं इसलिए मत्स्य संसाधनों के संरक्षण की नितांत आवश्यकता है और संबधित ज्ञान हितधारकों तक जनभाषा में पहुँचाना अपने आप अत्यंत महत्वपूर्ण प्रयास है । इस कार्यशाला में 26 अनुसंधान और शैक्षणिक संस्थानों के कुल 170 से अधिक प्रतिभागियों ने हाइब्रिड मोड में भाग लिया और कार्यक्रम के दौरान 122 शोध सारांश प्रस्तुत किए गए। इस अवसर पर कार्यशाला में प्रस्तुत वैज्ञानिक निष्कर्षों के संकलन, एक सारांश पुस्तक के रूप में प्रकाशित किये गए जिसका विमोचन गणमान्य व्यक्तियों द्वारा किया गया। इस संगोष्ठी का उद्देश्य मत्स्य संसाधनों के संरक्षण और प्रबंधन के नए आयामों को उजागर करने के साथ ही हिंदी भाषा में वैज्ञानिक संवाद को प्रोत्साहित करना भी था, जो एक प्रशंसनीय प्रयास है। कार्यशाला के समन्वयक डॉ एल.के. त्यागी, प्रधान वैज्ञानिक ने धन्यवाद प्रस्ताव ज्ञापित किया ।